"नारी सशक्तिकरण..... पारिवारिक/ सामाजिक हित में_ पक्ष या विपक्ष"

विपक्ष

नारी स्वयं शक्ति का रूप है| सृजन की शक्ति को भला सशक्तिकरण की क्या आवश्यकता है! आज नारी-सशक्तिकरण के नाम पर जिस तरह समाज व परिवार को तोड़ा -मरोड़ा जा रहा है मैं उस के विपक्ष में हूँ।

इतिहास साक्षी है कि वैदिक युग में परिवार माता के नाम से जाने जाते थे। स्त्री ही घर की मुखिया होती थी। मैं उस संस्कृति से हूँ जहां स्त्री को पाकशास्त्र से लेकर राजनीति ,घुड़सवारी व रण-कौशल तक सभी कलाएँ सिखाई जाती थी। घर के कामकाज के साथ वह राज-कार्य एवं युद्ध में भी पुरुषों का साथ देती थी। हर स्त्री अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार समाज निर्माण में सहयोग देती थी ।भारत आज भी अपनी उसी सभ्यता, संस्कृति और विरासत के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। बिना स्त्री के कोई भी धार्मिक सामाजिक कार्य पूरा नहीं होता था।

मध्यकालीन युग में मुगलों के आने के बाद बदलती परिस्थितियों व सामाजिक परिवेश के कारण समाज में कुरीतियां व रूढ़िवादिता ने जन्म लिया तथा सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक बदलाव आया ।लेकिन स्वतंत्रता के बाद कई समाज सुधारकों के प्रयास से परिस्थितियां वापस बदलने लगी। आधुनिक युग में समानता की दुहाई देते हुए परिवार व समाज की जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करना नारी- सशक्तिकरण का मापदंड बन गया है। आज की नारी पारिवारिक जिम्मेदारियों व स्वयं सिद्धा होने के मध्य सामंजस्य बनाने में असफल हो रही है। समाज के सभी बंधनों से मुक्त अपने निर्णय की निर्माता खुद को मानती है। अपने निजी स्वच्छंदता को ही महत्व देते हुए संयुक्त परिवार की अवहेलना करने लगी है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार बनने लगे ।और अब इस नारी -सशक्तिकरण की मार से तो वह भी टूटते नजर आ रहे हैं। एक वक्त था जब बचपन से ही परिवार के सदस्यों के बीच पलते बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास अपने आप होता था वह रिश्तों, परिवार व समाज को महत्व देते थे। आज इस टूटे परिवारों के परिवेश में तो वह शायद पूरी तरह से अपने माता- पिता को भी नहीं समझ पाते ।

संसार दो भागों में बटाँ है पुरुष व नारी। दोनों के मानसिक व शारीरिक बनावट के अनुसार कार्य बाटें गए हैं, जिनका अनुसरण करना आज पिछड़ापन माना जाता है। हालांकि विश्व के बेहतरीन पाक-कला निपूर्ण पुरुष ही हैं, मगर फिर भी मां के हाथ के खाने की खुशबू ही अलग है। मां के आंचल में बच्चा स्वयं को सदैव सहज व सुरक्षित महसूस करता है। छत्रपति शिवाजी की मां ने बचपन से ही उन्हें वीर गाथाएं सुना कर मानसिक रूप से इतना मजबूत बना दिया था कि इतिहास को ऐसा कुशल योद्धा मिला। आज की नारी अपनी आजादी के नाम पर बच्चे की परवरिश का जिम्मा दाईयों या विद्यालयों के सुपुर्द करके नारी सशक्तिकरण की बातें करती है। इस एक शब्द की आड़ में कितनी नारियों ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ रखा है। क्या स्त्री पहले कुशल गृहणी के साथ सफल व्यवसाई नहीं थी? मुझे याद है कि मेरी मां घर का सारा काम करने के बाद हमें पढ़ाती थी। शाम को पापा के साथ उनके व्यवसाय के सारे खाते लिखती थी। कितनी ही बार पापा व्यवसाय संबंधी मुश्किलों के बारे में मां से विचार- विमर्श भी करते थे। अधिकतर घरों में यही परिवेश था। कहीं भी नारी सशक्तिकरण के नारे नहीं गूंजते थे ।फिर भी घर एक योजनात्मक व कुशलता से चलते थे। आपस के मतभेद बंद कमरों में सुलझ जाया करते थे। आज की तरह छोटी सी अनबन से घर नहीं टूटा करते थे। स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक माने जाते थे। आर्थिक सहयोग के लिए अपनी योग्यता अनुसार अगर स्त्री कार्य करती है तो वह स्वाभाविक है। इसे नारी- सशक्तिकरण का नाम क्यों दिया जा रहा है? रानी लक्ष्मीबाई, अवंती देवी, रानी राजेश्वरी, रजिया सुल्तान, नूरजहां, अहिल्याबाई कस्तूरबा गांधी, इंदिरा गांधी और न जाने कितने अनगिनत नाम हैं जिन्होंने हर युग में अपनी क्षमता का परिचय दिया।

छोटे वस्त्र पहनकर सिगरेट का धुआं उड़ाना व देर रात घर आना ही क्या नारी- सशक्तिकरण है? बिना विवाह किए किसी भी आदमी के साथ संबंध बनाना व साथ रहना भी इसी शब्द का देन है। खुलेआम सामाजिक मर्यादाओं को भंग किया जा रहा

है। जो कानून महिला सुरक्षा व हित के लिए बनाए गए थे, उनका दुरुपयोग हो रहा है। नारी -सशक्तिकरण के नारे देने वालों से मैं पूछना चाहती हूं कि क्या अब महिलाएं सचमुच में मजबूत हो गई हैं? क्या यौन हिंसा पहले से कम हुई है? क्या वाकई परिवार में दांपत्य जीवन पहले से मजबूत हुए हैं? हालात कहां सुधरे हैं बल्कि दिन प्रतिदिन खराब हो रहे हैं लड़कियों की बढ़ती उम्र में विवाह संबंधी समस्याएं ,देर से बच्चों के जन्म में प्राकृतिक व शारीरिक समस्याएं भी बढ़ी है। साथ ही साथ विवाह पश्चात टूटते संबंधों ने परिवार व समाज में असुरक्षा व एकाकी जीवन जैसी कुंठाओं को जन्म दिया है। बच्चों की परवरिश को पूरा समय ना देने से बच्चे उम्र से पहले ही बड़े होने लगे हैं। जिनसे उनमें व्यसन जैसी बुरी लतें आम हो गई हैं। बाल अपराध बढ़ते जा रहे हैं। जो मापदंड परिवार व समाज को बांधते थे उन्हें दकियानूसी जंजीरों का नाम दिया जा रहा है। नारी सशक्तिकरण सिर्फ एक भ्रम मात्र है, सत्य तो यह है कि समाज को एक पढ़ा-लिखा युवा वर्ग चाहिए जो स्त्री को मात्र भोग की वस्तु ना समझे बल्कि उस उचित सम्मान दे। ऐसे संस्कार का बीज मां ही परवरिश के दौरान बच्चे में डालती है तथा उज्जवल समाज की नींव रखती है। कहीं नारी -सशक्तिकरण पुरुष व नारी के बीच की दूरियां इतनी ना बढ़ा दें कि संबंधों के बीच संतुलन ही बिगड़ जाए। इससे परिवार व समाज को घातक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। खाली इस शब्द के अर्थ को अच्छा व प्रभावशाली ना मानकर उसके दुष्परिणामों पर गौर किया जाना चाहिए तथा सही दिशा में उपयुक्त कदम उठाए जाने चाहिए।

पारुल लोहिया दिल्ली प्रदेश

उत्तरी क्षेत्र

शहर दिल्ली